RRB ALP & TECHNICIAN 2024
&
झारखण्ड पुलिस भर्ती
Pilot Batch
(CBT- 1&2)
सेवक बैच
HISTORY
दक्षिण भारत के राजवंश
Part -2
LIVE
16-03-2024 09:00 AM

बादामी/वातापी के चालुक्य :- (543-757 AD)

⇒ चालुक्यों की मूल शाखा का उदय वातापी (आधुनिक बादामी) के बीजापुर जनपद (कर्नाटक) में हुआ

संस्थापक :- पुलकेशिन प्रथम (543-566 AD)

→ शाब्दिक अर्थ :- महानसिंह

उपाधि :- सत्याश्रय, रणविक्रम व पृथ्वीवल्लभ

⇒ बादामी में एक दुर्ग का निर्माण करवाया तथा उसी को अपनी राजधानी बनाया।

⇒ पुत्र :- (2)
- कीर्तिवर्मन
- मंगलेश

(1) कीर्तिवर्मन-I :- (566 - 597 AD)

⇒ वनवासी का कदम्ब वंश, कोंकण के मौर्य, बेल्लारी - कर्नूल के नलवंशी शासकों को पराजित करके अपने साम्राज्य में मिलाया।

↳ अजयवर्मा यहाँ के शासक थे।

(3) मंगलेश-1 :- 597 – 609 AD

⇒ मंगलेश-1 ने कलचुरी नरेश बुद्धराज को पराजित किया था।

⇒ मंगलेश-1 वैष्णव धर्मानुयायी था, उसने परमभागवत की उपाधि धारण की थी।

⇒ बादामी के गुहा मंदिर (विष्णु को समर्पित) का निर्माण कार्य पूरा करवाया जो कीर्तिवर्मन द्वारा निर्मित था

④ पुलकेशिन-II :- (610-642 AD)

609

⇒ पुलकेशिन 1 का पौत्र तथा कीर्तिवर्मन का पुत्र पुलकेशिन II चालुक्य वंश का चौथा सर्वाधिक शक्तिशाली एवं प्रसिद्ध शासक था।

उपाधि :- सत्याश्रय, श्री पृथ्वीवल्लभ महाराज

⇒ पुलकेशिन II के विषय में जानकारी ऐहोल प्रशस्ति लेख मिलती है। → रवि कीर्ति

⇒ ऐहोल प्रशस्ति में पुलकेशिन II ने नर्मदा नदी (रेवा) के तट पर सम्राट हर्षवर्धन को पराजित किया है।

⇒ चीनी यात्री ह्वेनसांग 641 AD में पुलकेशिन-II के समय वातापी आया था।

⇒ पुलकेशिन II को पल्लव नरेश नरसिंहवर्मन I ने पराजित करके युद्ध में मार डाला।

⇒ विक्रमादित्य :- 655-680 AD

⇒ विनयादित्य :- 680-696 A.D

⇒ विजयादित्य :- 696-733 AD

⇒ विक्रमादित्य-II :- 733-746 AD

⇒ कीर्तिवर्मन II :- 746-757 (अन्तिम शासक)

रचना एवं रचनाकार :

⇒ ऋतुसंहारम्, मेघदूतम्, कुमारसंभवम्, रघुवंशम, मालविकाग्निमित्रम्, अभिज्ञानशाकुन्तलम – कालीदास

⇒ मुद्राराक्षस, देवीचन्द्रगुप्तम् → विशाखादत्त

⇒ काव्यदर्शन, दशकुमारचरित → दण्डिन

→ किरातार्जुनीय → भारवि

⇒ चारुदत्त — भास

⇒ योगाचार :- असंग

⇒ मृच्छकटिकम् → शुद्रक

→ चरक संहिता :- चरक

→ कामसूत्र :- वात्स्यायन

→ नीतिशास्त्र → कामंदक

⇒ पंचतंत्र :- विष्णुशर्मा

⇒ वृहतसंहिता, पंचसिद्धान्तिका :- वराहमिहिर

⇒ ब्रह्मसिद्धांत — आर्यभट्ट

→ विशुद्धिमग्ग :- बुद्धघोष